तिथि
27.4.2020

शीर्षक क्रम
TOPIC SL. No. 40 & 41

स्नातक द्वितीय वर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
Hindi (Hons.) - D II
पत्र - तृतीय - III
+
स्नातक प्रथम वर्ष
राष्ट्र भाषा हिन्दी
R.B Hindi - 100 marks

जयशंकर प्रसाद : काव्य के विविध पक्ष

प्रसाद और छायावाद :

प्रसाद जी छायावादी कवि थे। उनकी पहली रचना 'चित्राधार' की कुछ कविताओं में ही जिज्ञासा का दर्शन होने लगा था। इसी जिज्ञासा को लेकर 'प्रेमपथिक' की रचना हुई। 'झरना' में जिज्ञासा-भाव की वृद्धि हुई है। 'आँसू' में उसकी अंतिम परिणति है। छायावाद की दूसरी विशेषता है - वेदना की स्वानुभूति। 'आँसू' काव्य में प्रसाद जी की वेदना का सुंदर कथन हुआ है। वेदना की अनुभूति से पीड़ा घनीभूत होकर छायी हुई थी, दुर्दिन में वही पीड़ा आँसू बन कर बरस पड़ी। हाहाकार स्वरों में वेदना का गर्जन सुनाई पड़ने लगा -

"जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आई।"

प्रसाद जी की कविताओं में छायावादियों के समान अमूर्त को मूर्त रूप देने की क्रिया भी संपादित हुई है। प्रकृति को मूर्त रूप देते हुए वे कहते हैं -

'बीती विभावरी जाग री। अंबर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी।"

Scanned with CamScanner

छायावादियों की भाँति प्रसादजी ने भी छंद-बंधनों को तोड़ा है और नये छंदों की उद्भावना की है। बंगला के 'पयार' और 'त्रिपदी' छंदों को तथा अंग्रेजी के 'सॉनेट' को हिन्दी में उतार कर उन्होंने अपनी नवीनता-प्रियप्रवृत्ति का परिचय दिया है। छंद-बंधन को तोड़कर उन्होंने 'प्रलय की छाया' की रचना की।

2) रहस्यवाद और प्रसादजी:

रहस्यमय ब्रह्म के प्रति कवि की जिज्ञासा का परिचय मनु की जिज्ञासाओं में स्पष्ट है। 'हे अनंत! रमणीय! कौन तुम
यह मैं कैसे कह सकता।' जैसी पंक्तियों में उस अनंत ब्रह्म के प्रति उठने वाले कुतूहल का ही आभास मिलता है। सृष्टिकर्ता मनु को 'विराट' सृष्टि के निर्माण के लिए हेम पीयूष-सा अनुभूत होने लगता है। उस अनंत शक्ति के संबंध में उठने वाले ये विचार कवि प्रसाद की रहस्य-भावना का ही परिचय देते हैं।

3) राष्ट्रीयता और मानवता:

राष्ट्र और देश के प्रति समर्पित कवि 'प्रसाद' ने अपनी देश-भक्ति संबंधी भावनाओं को विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से व्यक्त किया। नाटकों

Scanned with CamScanner

में विभिन्न पात्रों के मुख से पदों का गान कराकर उन्होंने देशभक्ति संबंधी भावों को प्रकाशित किया है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में कार्नेलिया के मुख से भारत-स्तवन कराकर उन्होंने भारत के मधुमय रूप को ही भारतीयों के समक्ष रखा है:-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"

अलका द्वारा गाये गये प्रयाण-गीत की पंक्ति तो आज भी राष्ट्रभक्ति में झूमते हुए राष्ट्र-भक्तों के मुख से सुनी जाती है।

मानवतावादी विचारधारा के कवि प्रसाद ने मानवता को पीड़ित करने वाले युद्धों के विरोध में अपना स्वर गुंजित किया था। 'अशोक की चिंता' में उनके इन्हीं भावों का दर्शन होता है। 'कामायनी' में इड़ा भी जन-संहार का विरोध ही करती है।

4) मनोवैज्ञानिकता का समावेश-

प्रसादजी ने मनोवैज्ञानिक पद्धति पर मन के विभिन्न भावों का आकलन किया है। 'प्रलय की छाया' शीर्षक कविता में कला का जैसा मनोवैज्ञानिक चित्र प्रसादजी ने उपस्थित किया है अन्यत्र दुर्लभ है।

Scanned with CamScanner

5) दार्शनिक भाव –

प्रसादजी का विश्वास नियतिवादी दर्शन पर था। वे नियतिवाद पर आस्था रखने के कारण ही आनंदवादी थे और यह मानते थे कि संसार में कोई भी घटना समाज की दृष्टि से लाभकारी प्रभाव ही उत्पन्न करती है। वे 'शान्त' मतावलंबी होने के कारण 'समरसता' में विश्वास रखते थे। 'आँसू' में मिलन-विरह, सुख-दुःख आदि में समन्वय कर उन्होंने 'समरसता' के सिद्धांत का ही प्रतिपादन किया है। 'कामायनी' के 'आनंद सर्ग' में भी इसी समरसता का प्रतिपादन किया गया है।

नियतिवादी दर्शन में आस्था रखने वाले प्रसाद ने 'नियति' शब्द को भी शैव-दर्शन से ही लिया है। 'नियति चलाती कर्म चक्र है', यह मानकर ही वे किसी भी कार्य के करने में भय नहीं मानते थे। इसी नियति पर विश्वास होने के कारण वे हर परिस्थिति में निश्चिंत रहते थे। जो होना है होगा ही, फिर चिंता क्यों?

6) प्रकृति-चित्रण :

प्रसादजी ने प्रकृति के मधुर और भयानक दोनों ही रूपों का चित्रण किया है –

Scanned with CamScanner

"मधु बरसती विधु किरण है काँपती सुकुमार
पवन में है पुलक मंथर, चल रहा मधु भारा"
इन पंक्तियों में प्रकृति का मधुर रूप चित्रित है।
प्रकृति का प्रयोग अलंकार रूप में भी उनकी कविताओं में मिलता है।
'चलो पवन की तरह,
रुकावट है कहाँ।' में पवन का उपमा के रूप में ही कथन हुआ है। वातावरण प्रस्तुत करने के लिए भी उन्होंने प्रकृति का चित्रण किया है।
प्रकृति को प्रतीक रूप में तथा उद्दीपन रूप में भी प्रसादजी ने स्वीकार किया है। 'आँसू' में एक स्थान पर उन्होंने कहा है—
"निर्झर-सा झिर-झिर करता,
माधवी कुंज छाया में।" यहाँ 'माधवी-कुंज' प्रिय का प्रतीक है और 'छाया' सान्निध्य का। इसी प्रकार उद्दीपन के रूप में प्रकृति का चित्र उपस्थित करते हुए वे कहते हैं—
"शीतल समीर आता है,
कर पावन परस तुम्हारा।
मैं सिहर उठा करता हूँ,
~~बरस~~ बरसा आँसू की धारा।"

Scanned with CamScanner

7) प्रेम भावना –

प्रसाद प्रेम भाव के कवि थे। 'प्रेमपथिक' में उनकी प्रेम भावना का कथन हुआ है। वे प्रेम को एक 'यज्ञ' मानते हैं और मानते हैं कि इस यज्ञ में स्वार्थ भाव का हवन देना होता है।

'प्रेम-यज्ञ में स्वार्थ और कामना हवन करना होगा।'

दर्शन-जन्य प्रेम में ही उनका विश्वास था। उन्हें संयोग और वियोग दोनों का ही अनुभव था। उनके काव्य में दोनों के ही चित्र मिलते हैं। 'आँसू' संयोग की स्मृति में लिखा गया विरह-काव्य है। उसमें विरह के संचारियों - मोह, स्मृति, ग्लानि का कथन है।

प्रेम के क्षेत्र में वासना को उन्होंने कोई महत्व नहीं दिया है। 'कामायनी' के मनु में जब वासना आई तो –

"अंतरिक्ष में हुआ रुद्र हुंकार
भयानक हलचल सी।"

और मनु के अतिचार से भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई। इस कथा से वासना का विरोध सूचित किया गया है।

Scanned with CamScanner

काव्य-कला :

प्रसादजी की कविताओं पर उर्दू और फारसी का भी प्रभाव था।

उनकी भाषा में लाक्षणिकता को विशेष महत्व प्राप्त है। 'वेदना असीम गरजती' जैसे प्रयोगों में गरजती का अर्थ अपनी लाक्षणिकता के कारण 'तीव्रता' का ही बोध कराता है।

उनकी भाषा में चित्रात्मकता और शब्द-ध्वनि भी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। एक उदाहरण देखिए :

"नील परिधान बीच सुकुमार।
खुल रहा मृदुल अधखिला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल।
मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।"

उनकी भाषा में प्रसाद-गुण का आधिक्य है।

रस की दृष्टि से प्रसाद जी मुख्यतः शृंगार-रस के कवि थे; किन्तु करुण, वीर, वात्सल्य, आदि का भी सुंदर परिचय उन्होंने विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से दिया है।

Scanned with CamScanner

अलंकारों का सुंदर, स्वाभाविक प्रयोग प्रसादजी की कविताओं की विशेषता है। उनके प्रमुख अलंकार हैं :- विरोधाभास, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष आदि।

अन्ततः, यह कहा जा सकता है कि प्रसादजी का कवि रूप बड़ा ही ओजस्वी था। उन्होंने कल्पना और विचार का समन्वय कर अपने दार्शनिक-सिद्धांतों से हमें पथ दिखलाया है। उनकी रचनाओं के कारण हिन्दी-साहित्य गौरवान्वित हुआ है। आधुनिक-युग के कवियों में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

-डॉ० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य, हिन्दी-विभाग
रासनारायण महाविद्यालय
पण्डौल, मधुबनी
मो० नं०- 9955839898

Scanned with CamScanner